वेदों की ओर लौटो !

॥ ओ३म् ॥

॥ कृण्वन्तो विश्वमार्यम् ॥

श्रेष्ठ मानव बनो !

वेद प्रतिपादित मानवीय मूल्यों को जन-जन तक पहुँचाने
हेतु कार्यतत्पर सशक्त एवं समर्थ प्रान्तीय आर्य संगठन

वेदोद्धारक, युगप्रवर्तक
महर्षि दयानन्द

महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा का
मासिक मुखपत्र

वैदिक गर्जना

तपस्वी व्यक्तित्व की जन्मशताब्दी
पू.स्वामी श्रद्धानन्दजी
(हरिश्चन्द्र गुरुजी)

वर्ष १८ अंक १२ १० दिसम्बर २०१८

अमर हुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्दजी

कृतज्ञ आर्यजनों का श्रद्धापूर्ण नमन!

दिल्ली के आर्य महासम्मेलन में 'पू.हरिश्चंद्र गुरुजी (श्रद्धानन्दजी) जीवनी' का विमोचन।

औरंगाबाद (महाराष्ट्र) में पधारने पर के.मानवसंसाधन राज्यमन्त्री डॉ.सत्यपालसिंहजी का स्वागत करते हुए सभा व आर्य समाज के सदस्य।

लातूर के श्री किशनरावजी राऊत ने अपनी दिवंगत धर्मपत्नी की स्मृति में रू.५१ हजार का चैक सभापदाधिकारियों को प्रदान किया।

महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा का
मासिक मुखपत्र

वैदिक गर्जना

सृष्टि सम्वत् १,९६,०८,५३,११९ | कलि संवत् ५११९ | विक्रम संवत् २०७५
दयानन्दाब्द १९४ | मार्गशीर्ष | १० दिसम्बर २०१८

प्रधान सम्पादक
राजेन्द्र दिवे
(९८२२३६५२७२)

मार्गदर्शक सम्पादक
डॉ.ब्रह्ममुनि

सम्पादक
डॉ.नयनकुमार आचार्य
(९४२०३३०१७८)

सहसम्पादक
प्रा.देवदत्त तुंगार(९३७२५४१७७७) प्रा.ओमप्रकाश होलीकर(९८८१२१५६१६),
प्रा.सत्यकाम पाठक(९९७०५६२३५६), ज्ञानकुमार आर्य(९६२३८४२२४०)

अनुक्रम

हिन्दी विभाग

१) श्रुतिसुगन्ध ४
२) सम्पादकीयम् ५
३) हिंसा और अहिंसा - विवेक ६
४) आर्यों का महाकुम्भ - विस्तृत वृत्तान्त........ ९
५) समाचार दर्पण १५
६) ऐसे थे स्वामी श्रद्धानन्दजी! १६

मराठी विभाग

१) उपनिषद संदेश/दयानंद वाणी १७
२) म.दयानंदांचे राजकीय तत्त्वज्ञान १८
३) पू.हरिश्चंद्र गुरुजींचा पाळणा २२
४) दिल्लीच्या आर्य महासंमेलनात मराठीचा गजर २४
५) अभिनंदन वार्ता २५
६) वार्ताविशेष २७
७) शोकवार्ता २८
८) सभेचे उपक्रम ३०

* प्रकाशक *
मन्त्री, महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा,
सम्पर्क कार्यालय-आर्य समाज,
परली-वैजनाथ ४३१५१५

* मुद्रक *
वैदिक प्रिन्टर्स
महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा
आर्य समाज, परळी-वै.

वैदिक गर्जना के शुल्क
वार्षिक रु.१००/-
आजीवन रु.१०००/-

इस मासिक पत्रिका में प्रकाशित लेखों तथा विचारों से सम्पादक मण्डल सहमत हो, यह अनिवार्य नहीं है। किसी भी विवाद की परिस्थिति में न्यायक्षेत्र परली-वैजनाथ जि.बीड ही होगा।

श्रुतिसुगंध

वह महान ईश्वर कैसा है?

न तस्य प्रतिमाऽअस्ति यस्य नाम महद्यशः।।
हिरण्यगर्भऽइत्येष मा मा हिंसीदित्येषा यस्मान्न जातऽइत्येषः।।

(यजु.३२/३)

पदार्थान्वय–हे मनुष्यो!**(यस्य)** जिसका**(महत्)** पूज्य बडा **(यशः)** कीर्ति करनेहारा धर्मयुक्त कर्म का आचरण ही **(नाम)** नामस्मरण है, जो **(हिरण्यगर्भः)** सूर्य बिजुली आदि पदार्थों का आधार **(इति)** इस प्रकार **(एषः)** अन्तर्यामी होने से प्रत्यक्ष जिसकी **(मा)** मुझको**(मा, हिंसीत्)** मत ताडना दे वा वह अपने से मुझ को विमुख मत करे **(इति)** इस प्रकार**(एषा)** यह प्रार्थना वा बुद्धि और**(यस्मात्)** जिस कारण **(न)**नहीं **(जातः)** उत्पन्न हुआ**(इति)** इस प्रकार **(एषः)** यह परमात्मा उपासना के योग्य है। **(तस्य)** उस परमेश्वर की**(प्रतिमा)** प्रतिमा–परिमाण उसके तुल्य अवधि का साधन प्रतिकृति, मूर्ति वा आकृति**(न अस्ति)**नहीं है।

अथवा द्वितीय पक्ष यह है कि **(हिरण्यगर्भः)**इस पच्चीसवें अध्याय में १० मन्त्र से १३ मन्त्र तक का **(इति, एषः)** यह कहा हुआ अनुवाक **(मा, मा, हिंसीत्)(इति)** इसी प्रकार **(एषा)** यह ऋचा बारहवें अध्याय की १०२(वां) मन्त्र है और **(यस्मान्न जातः–इत्येषः)** यह आठवें अध्याय के ३६, ३७ दो मन्त्र का अनुवाक **(यस्य)** जिस परमेश्वर की **(नाम)** प्रसिद्ध महत्**(महती) (यशः)** कीर्ति है, **(तस्य)** उसका**(प्रतिमा)** प्रतिबिम्ब(तस्वीर) **(न अस्ति)** नहीं है।

भावार्थ – हे मनुष्यों! जो कभी देहधारी नहीं होता, जिसका कुछ भी परिमाण सीमा का कारण नहीं है, जिसकी आज्ञा का पालन ही नामस्मरण है, जो उपासना किया हुआ अपनेउपासकों पर अनुग्रह करता है, वेदों के अनेक स्थलों में जिसका महत्त्व कहा गया है। जो न ही मरता, न विकृत होता, न नष्ट होता उसी की उपासना निरन्तर करो। जो इससे भिन्न की उपासना करोगे, तो इस महान् पाप से युक्त हुए आप लोग दुःख क्लेशों से नष्ट होओगे।

(महर्षि दयानन्द कृत यजुर्वेद भाष्य)

संपादकीयम् विघातक वक्तव्य क्यों...?

लोकतन्त्र में राजनेताओं की भूमिका पिता के समान होती है। अपनी प्रजा का पुत्रवत् पालन करना, यह उनका आद्यधर्म है। अपने व्यवहार, विचार व उच्चार से जनता को किसी बात भी बात का कष्ट न पहुंचें, इसका उन्हें सदैव ध्यान रखना चाहिए। नेताओं अथवा जनप्रतिनिधियों के ऐसे आचरण से ही तो उस राष्ट्र में सुशासन स्थापित होगा। दुर्भाग्य से वर्तमान की राजनीति में कुछ अलग ही दिखाई दे रहा है। आजकल के वाचालवीर राजनेताओं में कुछ के कुछ बयान देने की होड सी लगी है। अपने भडकाऊभरे वक्तव्यों का देश की जनता पर क्या असर होगा? इसकी इन्हें थोडी भी चिन्ता नहीं है। अपने विवेकहीन वक्तव्यों से सम्प्रदाय व जातिवाद, प्रान्तवाद व भाषावाद का जहरीला संघर्ष देश को किस दिशा में ले जायेगा? इसपर कोई सोच नहीं रहा।

वैसे तो देश में विकास व अन्य विधायक कामों की कुछ भी कमी नहीं है। नेताओं, सांसदों, विधायकों व मन्त्रियों को करने के लिए बहुत कुछ है। लेकिन यह करना छोडकर अलग-अलग वक्तव्य देकर अपनी विवेकहीनता का परिचय वे देने में अग्रणी दिखाई दे रहे हैं। सत्तासीन पार्टी हो या विपक्ष के नेता अथवा कुछ सामाजिक व धार्मिक समूह के नेता! इन सभी की वाणी का संयम टूट चुका है। कोई देश की संस्कृति के विरोध में बोलता है, तो कोई भरी सभा में लडकियों को भगाकर उनसे शादियाँ रचाने की बात करता है! कोई कट्टरपन्थी कुछ ही समय में देश को खतम करने का वक्तव्य देता है, तो कोई गले पर सुरा चलने पर भी वन्देमातरम् न कहने की हुंकार लगाता है! कोई अपने मजहबी लोगों को दस-दस बच्चे पैदा करने की वकालत करता है, तो कोई इस देश को हिन्दू राष्ट्र बनाने का उद्घोष करता है! कोई इस देश को अपना देश मानने के लिए ही तैय्यार नहीं है, तो कोई स्वयं को ही मूलनिवासी बताता है। कोई देश को असहिष्णू बताकर देश में न रहने तक की बात करता है, तो कोई हनुमान को अपनीही जाति व मजहब का वंशज बताता है! इस तरह के नानाविध तर्कविसंगत व बुद्धिहीन वक्तव्यों को देते हुए कोई भी इसके दुष्परिणामों पर सोचने के लिए तैय्यार नहीं है। इससे देश में अशांति व अस्थिरता का माहौल बनने पर फिर पछताने के सिवा और क्या रहेगा? अतः वाणी का प्रयोग विचारपूर्वक करना ही समुचित होगा।

– नयनकुमार आचार्य

हिंसा और अहिंसा - विवेक

- डॉ.ब्रह्ममुनि वानप्रस्थी

आज दुनिया में हिंसा और अहिंसा के नाम पर बहुत भ्रम फैला हुआ है। धार्मिक कहलानेवाले पन्थवादी, नास्तिक, वाममार्गी तथा आधुनिक विज्ञानवादी लोग अपनी-अपनी व्याख्यायें प्रस्तुत करते हैं। परंतु इनकी व्याख्याओं से सही अर्थों में समाधान नहीं हो सकता, क्योंकि इन्होंने इस विषय के साथ अन्य विषय भी जोडे हैं। 'हिंसा' का अर्थ किसी प्राणि को जान से मार डालना या कष्ट पहुंचाना था। और ऐसा न करना अहिंसा कहा जाता था। और उन्हें ही धार्मिक भी माना जाता था। किन्तु बीच के काल में लोगों ने यज्ञ में बलि देने की प्रथा आरम्भ की। वह भी धर्म, धार्मिकता, ईश्वर आदि के नाम पर! यह कितना विडम्बना का विषय था। तब उसका अनेक लोगों ने विरोध किया, पर ये लोग मानें नहीं । इसके विपरीत उन्हें ही नास्तिक कहकर अलग किया गया और बताया गया कि, 'वैदिकी हिंसा, हिंसा न भवति।' जो कि यह पूर्णत: गलत था। ऐसे ही बलि देने की प्रथा वैदिक लोगों से ही इस्लाम, ख्रिश्चन आदि पन्थों में चली गयी। ईश्वर के नाम पर उसे प्रसन्न करने के लिए प्राणियों की बलि देना आज भी चालू है। इसमें मनुष्य की बलि देने तक ये लोग पहुंच गये। आज वेद को माननेवाले हिंदू भी देवी-देवताओं के सामने खुलेआम बकरियों व भैसों के बलि देते हैं। मुसलमान अल्लाह के नाम पर और ख्रिश्चन भी ईसा, गॉड के नाम पर बलि देते हैं। ये लोग जब धार्मिक बोलकर इन क्रियाओं को करते हैं, तो वाममार्गियों ने भी हिंसा शुरु की।

बलिप्रथा के साथ ही मांसाहार भी होने लगा और भगवान, देवी-देवताओं को जो बलि दी जाती थी, उसका प्रसाद के रूप में मांसाहार का प्रचलन शुरु हुआ। वह भी धार्मिक कृत्य के रूप में! समय के साथ लोगों की धर्म के बारे में प्रतिक्रिया होते गयी और मांसाहार करने के लिए प्राणियों की हत्या करना शुरु हुआ। धार्मिक कहलानेवालों में भी रोजही मांसाहार शुरु हुआ।

'जीव को मारने से यदि हिंसा होती है, तो वनस्पतियां भी तो सजीव ही हैं। तब उन्हें खाने से हिंसा नही होती क्या?' यह मांसाहारी लोगों का प्रश्न था। इसका सही उत्तर कोई भी नहीं दे सके। इसके विपरीत कुछ लोगों ने वनस्पतियों में जीव नहीं है, यही बताया। इस तरह से हिंसा का अतिरेक हुआ और आज रोज

बुचडखाने बढते गये और इस कारण मांसाहार भी बडे पैमाने पर चलता रहा। आज सभी पंथवाले मांसाहार कर रहे है और स्वयं को धार्मिक समझनेवाले भी मांस खा रहे है। यह हुआ हिंसा का अतिरेक और विपरीत अर्थ!

इसके साथ ही अहिंसा का विपर्यास भी किया गया । जैन पंथियों ने अहिंसा को अत्यधिक महत्त्व दिया। इसके साथ ही पाप-पुण्य की बातें भी जोडी गयी। यह क्या विवेक बात हो गयी? जीव को मारना तो छोडो, किन्तु प्राणियों को तनिक भी कष्ट नहीं देना, मुंह पर कपडा बांधना, पानी छानकर पीना, जमीन में पैदा होनेवाली शाक-सब्जी खाना, फल नहीं खाना, दूध तक नहीं पीना आदि-आदि बातें अहिंसा के नाम पर शुरु हुई। इतना ही नहीं, स्वयं को कष्ट देना किन्तु दूसरों को कभी कष्ट नहीं देना! दुष्टों को भी कष्ट नहीं पहुंचाना... आदि बातों का नाम 'अहिंसा' हुआ और समाज व देश में इसका विपरीत परिणाम यह हुआ कि, क्षत्रियत्व ही कम होते गया और हमारा देश गुलाम बन गया।

हिंसा और अहिंसा के बारे में आज पूर्णत: भ्रम फैला हुआ है और यह भ्रम पंथवादियों के कारण ही निर्माण हुआ है। वेद में इसके बारे में विवेकपूर्ण ज्ञान दिया गया है। परमात्मा ने यह सारी सृष्टि जीव के कल्याण के लिए बनायी है। वेद का ज्ञान भी जीव के कल्याण हेतु ही है। सृष्टि में भोगयोनियाँ और कर्मयोनियाँ बनायी गयी। जीव के शुभाशुभ कर्मों के फल परमात्मा देता है। मनुष्य योनि में उसे वेद का ज्ञान दिया। जीव की जो इच्छा सुख व शान्ति से जीने की और परमात्मा के सान्निध्य में रहकर परमानंद प्राप्त करने की है, उसकी प्राप्ति के लिए सब प्रकार के साधन दिये और ज्ञान भी प्रदान किया।

वेद 'हिंसा मत करो', ऐसा कहता है। इसका अर्थ अहिंसा का पालन करना, यह मनुष्य जीवन के लिए आवश्यक है। किन्तु वेद मनुष्यों, राजाओं तथा विद्वानों को यह भी आदेश देता है कि दुष्ट, दुराचारी, क्रूर लोगों को मार डालो और अन्य सभी अच्छे लोगों, सद्विचारों व पवित्र आचार धर्म का संरक्षण करो। तो यहाँ केवल किसी को कष्ट देना, जान से मार डालना यह तो 'हिंसा' नहीं कहाती, तो उसके उद्देश्य व परिणाम को देखा जाता है, जो कि यह विवेक का विषय है। कारण के बिना मारना, खाने के लिए मारना जब कि वह आपका खाद्य ही नहीं! बलि देना, वह भी ईश्वर के नाम पर! यह सब गलत है।

अत: वेद का आदेश, उपदेश, निर्देश यह सब कुछ विवेकपूर्ण है। व्यक्ति, परिवार, समाज, राष्ट्र व विश्व में मनुष्यमात्र को सुख, निर्भयता व धार्मिकता से जीने

के लिए दुष्टों का नाश करो, मारो, बुराई को नष्ट करो, यह वेद बताता है। उसके साथ वेद में प्राणियों की बलि देना, खाने के लिए मार डालना, निरुपद्रवी प्राणियों को तकलीफ देना, जान से मारना आदि को हिंसा कहा है और इसे करने को मना किया है। आत्मकल्याण के लिए अहिंसा को अपनाने तथा हिंसा, वैरभाव आदि को त्यागने का भी उपदेश वेद में पढने मिलता है। साथ ही वेदों ने हिंसा व अहिंसा के फलों का भी प्रतिपादन किया है । आधुनिक वैज्ञानिक लोग अन्न की समस्या को छुडाने के लिए पर्याय के रूप में मांसाहार को अपनाते हैं । इसके लिए वे 'प्राणियों को जान से मार डालना यह वनस्पतियों को तोडने व काँटने जैसा ही है। और उसमें न तो हिंसा है और न ही पाप है।' ऐसे कुतर्क वे देते हैं। लेकिन उनका भी यह विचार पूर्णत: मिथ्या व अविवेकी है।

परमात्मा ने सृष्टि के हर एक प्राणि का भोजन(अन्न) निश्चित किया है और उस अन्न को पचाने की व्यवस्था भी सुव्यवस्थित रूप से की है। शरीर की रचना, साधन, लाला आदि अन्न के अनुसार हैं। भोगयोनियों के प्राणि अपना-अपना नैसर्गिक(स्वाभाविक) आहार ही ग्रहण करते हैं। तब उनके पाप और पुण्य का कोई प्रश्न ही उत्पन्न नहीं होता।

जब हम स्वाभाविक आहार के विरुद्ध जायेंगे, तब उनके शरीर में पीडा, कष्ट पैदा होंगें। वे सभी उसके गलतियों का ही फल होगा। शाकाहारी प्राणियों को मांसाहारी बनाना और मांसाहारी प्राणियों को शाकाहारी बनाना, यह बिगाड कर लेना है।

मनुष्य भी सृष्टि का अविभाज्य घटक है। उसको भी उसका स्वाभाविक अन्न लेने में पाप-पुण्य का कोई सवाल नहीं । मनुष्यों का नैसर्गिक आहार वनस्पति, फल, दूध आदि है। तो उसको ग्रहण करने में, वनस्पतियाँ सजीव रही, तो भी पाप नहीं लगेगा। इसके विपरीत अन्न लेने से कष्ट होगा, रोग होंगें और वही पाप माना जायेगा।

अत: पाप-पुण्य की कल्पना वेद के आधार पर ही स्वीकार करनी चाहिये। स्वाभाविक अन्न लेना ही पुण्य है और अस्वाभाविक अन्न लेना ही पाप है।

- 'ईशकृपा', विद्यानगर, परली-वै. जि.बीड

* सूचना *

कृपया ग्राहकों व पाठकों से निवेदन है कि, वैदिक गर्जना मासिक प्रतिमाह आपको भेजी जाती है। किन्तु कई सज्जनों को यह पत्रिका नहीं मिल पाती। न मिलने पर कृपया सभा के व्यवस्थापक श्री रंगनाथजी तिवार मो.९४२३४७२७९२ को सूचित करें। उन्हें दुबारा भेजी जायेगी।

(विस्तृत वृत्तान्त...)

आर्यों के महाकुम्भ से नया कीर्तिमान् स्थापित

महासम्मेलन से आर्य समाज नई अंगडाई लेगा!

अद्‌भुत कार्यप्रणाली, प्रभावशाली नियोजन, आर्यजनों के सामूहिक प्रयत्न, दानदाताओं की उदारता, नई तन्त्रप्रणाली का उपयोग, शीर्षस्थ राजनेताओं की उपस्थिति, सभी प्रकार के मतभेदों को भूलाकर आर्यनेताओं, विद्वानों, संन्यासियों का भारी संख्या में उपस्थित होना, देश के विभिन्न प्रान्तों से आयी आर्यजनता व विदेशों से पधारे आर्यअतिथिजनों का सहभाग इन सभी के फलस्वरूप दिल्ली का अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन अपेक्षा से भी अधिक सफल रहा। दि.२५ से २८ अक्टूबर २०१८ को राजधानी दिल्ली के रोहिणी सेक्टर १० के विशाल प्रांगण में आयोजित आर्यों के इस विशाल महाकुम्भ ने आज तक के सामूहिक आर्य समाज कार्यक्रमों के रिकार्ड तोड दिये। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा व राजधानी दिल्ली की सर्वाधिक सक्रिय प्रान्तीय सभा के संयुक्त तत्त्वावधान में आयोजित इस भव्य महासम्मेलन के कारण आर्यों में नया उत्साह जग गया है।

इस विश्वस्तरीय आर्य महासम्मेलन का उद्‌घाटन भारतवर्ष के महामहीम राष्ट्रपति श्री रामनाथ कोविन्दजी के करकमलों से हुआ तथा समापन गृहमन्त्री श्री राजनाथसिंहजी की प्रमुख उपस्थिति में हुआ। चार दिनों के इस सम्मेलन में योगगुरु स्वामी रामदेवजी, आचार्य बालकृष्णजी, आचार्य देवव्रतजी(राज्यपाल, हि.प्र.), श्री जगदीशजी मुखी(राज्यपाल, आसाम), श्री गंगाप्रसादजी आर्य (राज्यपाल, सिक्कीम), देश के पर्यावरण मन्त्री डॉ.हर्षवर्धनजी, सडकनिर्माण मन्त्री श्री नीतिनजी गडकरी, मानवसंसाधन राज्यमन्त्री डॉ.सत्यपाल सिंहजी, श्री योगी आदित्यनाथ(मुख्यमंत्री, उ.प्र.), श्री मनोहरलाल खट्टर (मुख्यमन्त्री, हरियाणा), श्री मनीष सिसोदिया(उपमंत्री, दिल्ली), श्री रमाकान्त गोस्वामी(वरिष्ठ काँग्रेस नेता), श्री राजनाथ सिंहजी(गृहमन्त्री), कॅप्टन अभिमन्यु आर्य(वित्तमन्त्री, हरियाणा), श्री सुधांशु त्रिवेदी(श.प्रवक्ता, भाजपा), सांसद श्री स्वामी सुमेधानन्दजी, आदि राजनेताओंने पधारकर अपने सम्बोधन से आर्यों को मन्त्रमुग्ध किया। तथा आर्य जगत् के शीर्षस्थ विद्वान सर्वश्री डॉ.वेदपालजी, डॉ.महावीरजी अग्रवाल, आचार्य डॉ.वागीशजी शर्मा, डॉ.प्रशस्यमित्रजी

शास्त्री, डॉ.वेदप्रकाश श्रोत्रिय, डॉ.महेश विद्यालंकार, आचार्य सनत्कुमारजी, डॉ.सूर्यदेवी चतुर्वेदा, आचार्य सत्यानन्दजी वेदवागीश, डॉ.सोमदेवजी शास्त्री, डॉ.ज्वलन्तकुमारजी शास्त्री, आचार्या डॉ.सुमेधाजी तथा संन्यासी स्वामी धर्मानन्दजी, आचार्य विजयपालजी, स्वामी डॉ.देवव्रतजी, स्वामी प्रणवानन्दजी, स्वामी उत्तमायति आदियोंने मार्गदर्शन किया।

पहले दिन प्रात: मुख्य मंच पर राष्ट्रपति महोदय ने अपने भाषण में आर्य समाज का गौरवपूर्ण शब्दों में उल्लेख करते हुए कहा – नैतिकता के आधार पर आधुनिक शिक्षा तथा समाज के प्रत्येक वर्ग के लिए साथ ही वंचित वर्गों व महिलाओं के उत्थान के लिए 'आर्य समाज' ने प्रभावशाली योगदान दिये हैं। महर्षि दयानन्द के विषय में उन्होंने बताया कि स्वामीजी सामाजिक व आध्यात्मिक सुधार के निर्भीक योद्धा थे। शिक्षा, समाजसुधार, अस्पृश्यता निवारण, महिला सशक्तिकरण के बारे उन्होंने जो कार्य किये, वे सम्प्रति भारतीय समाज व पूरे विश्व के लिए प्रासंगिक हैं। उन्होंने समाज को कुरीतियों व आडम्बरों से मुक्त कराया। आस्था व आधुनिकता का सुन्दर समन्वय हमें स्वामीजी में देखने मिलता है।

वर्तमान समय में महर्षि के विचारों व सिद्धान्तों की आवश्यकता महसूस करते हुए उन्होंने कहा कि बदलते परिवेश में हमें स्वामीजी के बताये मार्ग पर चलना बहुत ही प्रासंगिक हो गया है। समाज के मत-पन्थ-सम्प्रदाय और जातिपाति की बुरी परम्पराओं से मुक्त कराने के लिए अर्थात् श्रेष्ठ बनाने के लिए वे आजीवन सक्रिय रहें। अन्त में 'ग्लोबल वार्मिंग' जैसी चुनौतियों का सामना करते हुए आर्य समाज को जागरुक रहने का आवाहन राष्ट्रपतिजी ने किया।

इससे पूर्व सम्मेलन के स्वागतभाषण में सार्वदेशिक सभा के प्रधान श्री सुरेशचन्द्रजी आर्य ने बताया कि आर्य समाज यह एक जन आन्दोलन है, जो कि सारे विश्व में फैले अविद्या-अन्ध:कार को दूर करने हेतु प्रयत्नशील है । देश की स्वतन्त्रता में सर्वाधिक योगदान आर्य समाज का रहा और आज वर्तमान में भी इसका हर एक सिपाही अपने उद्देश्यों को साथ लेकर **'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्'** का सपना साकार करने हेतु सक्रिय हो रहा है। इस महासम्मेलन में आप सभी महानुभावों हृदय से आभार एवं धन्यवाद !

केन्द्रीय मानव संसाधन राज्यमन्त्री डॉ.सत्यपालसिंहजी ने अपने ओजस्वी सम्बोधन में कहा – आर्य समाज यह श्रेष्ठ पुरुषों का संगठन है। **'आर्य ईश्वरपुत्र:।'** के अनुसार परमात्मा के पुत्र होने के कारण उसके कार्यों को पूर्णत्व प्रदान करने की

जिम्मेदारी आर्यों पर हैं। दुनिया के सबसे शक्तिशाली अमेरिका के राष्ट्रपति बाईबल का हाथ में लेकर शपथ ग्रहण करते हैं। हमारा भी सपना है कि भारत के राष्ट्रपति व प्रधानमन्त्री भी अपने हाथ में 'वेद' लेकर शपथ ग्रहण करेंगें। देश के गौरव को पुनःश्च लौटाना हो, तो हम सभी को वेदज्ञान की ओर जाना होगा। महर्षि दयानन्द की कृपा के फलस्वरूप मैं आप सभी के सामने खडा हूँ। उनके उपकारों को हम भूल नहीं सकते।

हिमाचलप्रदेश के राज्यपाल आचार्य श्री देवव्रतजी ने अपने भाषण में कहा कि आर्य समाज का अतीतकाल बहुतही जाज्ज्वल्यमान है। घोर घने अन्ध:कारयुग में म.दयानन्द ने जन्म लेकर हजारो वर्षों से चल रहे कुविचारों की रद्दी को टोकरी फेंक डाला। जातिपाति का घोर विरोध करने की जंजीरों में छटपटा रहे भारत देश में सर्वप्रथम स्वराज्य व स्वदेशी का नारा दिया। आर्य समाज ने शिक्षा क्षेत्र में जो कार्य किया, वह अतुलनीय है। गुरुकुल की शिक्षा पद्धति को आधुनिक टेक्नॉलॉजी से से जोडकर कार्य करने की भी उन्होंने बात कहीं। राज्यपाल महोदय ने आगे बताया कि आधुनिक रासायनिक कृषि के कारण आज असाध्य रोग बढ रहे हैं। हमारी जमीन बंजर हो रही है। इसलिए भारतीय परम्परा के अनुसार नैसर्गिक, विषमुक्त खेती करनी चाहिए, जिसके अनेकों लाभ ही लाभ नजर आयेंगें। महर्षि दयानन्द द्वारा लिखित '**गोकरुणानिधि**' ग्रन्थानुसार गाय महत्त्व, उसके पंचगव्यादि के प्रयोग से हम समृद्ध कृषि प्रणाली को बढा सकते हैं, जो कि सबके लिए स्वास्थ्यप्रद व कल्याणकारी सिद्ध होती है ।

भाजपा के राष्ट्रीय प्रवक्ता श्री सुधांशु त्रिवेदी ने अपने भाषण में कहा - भारतीय ज्ञान की उद्गम परम्परा वेदों से प्रवाहित हुई है, जिसका यथार्थ प्रतिपादन महर्षि दयानन्द ने किया है। स्वामीजी के सत्यार्थ वेदविचारों से विश्व का सबसे बडा युवा देश भारत सर्वदृष्टि से विकसित हो सकेगा। दयानन्द की दूरदृष्टि व ज्ञान के अद्भुत स्त्रोत से ही यह देश सर्वशक्तिमान बनेगा।

आर्यवीर दल सम्मेलन में प्रधान संचालक डॉ.स्वामी देवव्रतजी ने कहा कि, 'आर्य वीर दल' यह आर्य समाज शक्ति की भुजा है। सेवा, शक्ति व संस्कृतिरक्षा इन प्रमुख उद्देश्यों को पूर्ण करने के लिए यह संगठन कार्यरत है। हजारों वर्ष हम विदेशियों के गुलाम रहे। पश्चिमी अपसंस्कृति के कारण ऋषि-मुनियों की यह पावन संस्कृति पराङ्मुख हुई। अत: इसकी रक्षा का भार आर्य समाज व आर्य वीर दल पर है। गुरुकुल झज्जर के आचार्य श्री स्वामी विजयपालजी ने बताया कि वैदिक धर्म

व संस्कृति के प्रचार की शुरुआत हमें स्वयं से तथा परिवार से करनी होगी। हमारी सन्तानें आज कुमार्गमार्गी बन रही है। प्रत्येक ने एक सन्तान आर्य समाज के लिए समर्पित करनी चाहिए।

दूसरे दिन के प्रथम सत्र में ख्यातनाम वैदिक प्रवक्ता आचार्य डॉ.वागीशजी शर्मा ने कहा कि हजारों की भीड में दिखाई देनेवाले अनेकों सिर दिलों-दिमाग से रहित होते हैं। ऐसी भीड का नेतृत्त्व जब पाखण्डी धर्मगुरुओं, भ्रष्टाचारी राजनेताओं व अविचारी लोगों के हाथों में आ जाता है, तब वह अनियन्त्रित भीड अराजकता, हिंसा, आतंकवाद एवं युद्ध करने के लिए तत्पर हो जाती है। महर्षि दयानन्द जैसे महापुरुष ने अपने प्रबल पुरुषार्थ व ज्ञानसाधना से वेद के आधार पर आर्य समाज का संगठन खडा किया जो कि भीड को भी एक सुसंगठित व सुसंस्कारित समाज के रूप में बदलने का सामर्थ्य रखती है। उत्तराखण्ड सभा के प्रधान श्री विनय विद्यालंकार ने कहा कि आज की लोकतांत्रिक व्यवस्था समाज को दिशाहीन बना रही है। लिव-इन रिलेशनशिप एवं समलैंगिक सम्बन्धों की मान्यता जैसे सुप्रीम कोर्ट के निर्णयों से पारिवारिक व्यवस्था नष्ट होकर अपसंस्कृति का आरम्भ हो रहा है। इसका हमें विरोध करना चाहिए।

आर्य समाज की भावी गतिविधियों व कार्यक्रमों विवेचन करते हुए दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के मन्त्री एवं इस महासम्मेलन के युवा संयोजक श्री विनय आर्य ने कहा कि आर्य समाज का इतिहास अन्य सुधार संगठनों की अपेक्षा महान है। आर्यजनों ने ही मिलकर लाहौर में सर्वप्रथम स्वदेशी बैंक '**पंजाब नैशनल बैंक**' की स्थापना की थी। जातिप्रथा निवारण, दलितोद्धार, शुद्धि आन्दोलन आदि कार्यों में आर्य समाज के महान नेता स्वामी श्रद्धानन्दजी ने अद्भुत कार्य किया था। नाम के आगे '**आर्य**' लगाने की परम्परा भी आर्य समाज के कारण ही आरम्भ हुई।' उन्होंने अपने भाषण में सभा व आर्य समाज द्वारा भविष्य में आरम्भ किये जानेवाले कार्यक्रमों का विस्तृत ब्यौरा दिया।

दूसरे सत्र में केन्द्रीय सडक निर्माण व परिवहन मन्त्री श्री नितिन गडकरी ने कहा - 'महर्षि दयानन्दजी की विचारधारा से भारत देश पुनश्च विश्वगुरू बन सकता है। इन्हीं विचारों से जातिवाद, साम्प्रदायिकता, छुआछूत आदि भेदभाव नष्ट होकर हमारी सुख समृद्धि व शक्ति में बढोतरी हो सकती है। स्वामी दयानन्द ने देश के सामाजिक, धार्मिक व आध्यात्मिक उत्थान में जो योगदान दिया है, उन कार्यों को हम कभी भूला नहीं सकते।'

इस अवसर पर आसाम के राज्यपाल श्री जगदीशजी मुखी बताया कि सामाजिक

कुरीतियों पर सबसे पहला प्रहार आर्य समाज ने किया। उन्होंने स्मरण दिलाया कि वे जब डी.ए.वी.स्कूल में पढते थे, तब आर्य समाज की विभिन्न गतिविधियों ने सम्मिलित होने का सुअवसर प्राप्त हुआ।

इसी बीच योग गुरु बाबा रामदेवजी जब मंचपर पधारे, तब उपस्थित आर्यों ने तालियों की गडगडाहट से उनका स्वागत किया। श्री रामदेवजी ने अपने उद्‌बोधन में महर्षि दयानन्द के उपकारों की चर्चा बडे ही गौरवपूर्ण शब्दों में की। साथ ही आर्य समाज के कार्यों पर भी प्रकाश डाला। इस बार वे महर्षि दयानन्द व आर्य समाज की प्रशंसा में खुलकर बोले। अपने प्रदीर्घ भाषण में उन्होंने कहा- 'आर्यों के इस महाकुम्भ के माध्यम से सारे विश्व में वेद, आर्यत्व व म.दयानन्द की प्रतिष्ठा हो। यह सपना साकार होना चाहिए। वेद की शाश्वत वाणी भगवान द्वारा हमें प्रदत्त है, तो इसे सारी धरती पर फैलाने के लिए ही हमारा जन्म हुआ है। जब कुछ पौराणिक साधु लोग जातिप्रथा के बारे में मुझसे, 'मेरे दिमाग को ठीक कहने की बात करते हैं, तब मैं ही उन्हें उनके दिमागों को ठीक रखने की बात करता हूँ।' इसके लिए दयानन्द मूलभूत दवा देकर गया है, जिससे कुछ दिनों में ही ये सारी बिमारियां दूर हो जाएगा। उन्होंने बताया कि जातीयता को दूर करने के लिए उन्हें शंकराचार्यों व राजनैतिक व धार्मिक नेताओं से कुछ पहल करनी पडेगी। महर्षि दयानन्द कहते हैं - 'हम सब एक ही मनुष्य जाति है, तो इसके अनुसरण से ही सारा देश मानवता के एक सूत्र में बन्ध सकता है। हमारा संकल्प है कि पतंजलि योगपीठ के माध्यम से एक-दो वर्षों में सत्यार्थ प्रकाश का विश्व की भी भाषाओं में अनुवाद करना! विश्व के सभी ग्रन्थालयों व शिक्षालयों में सत्यार्थप्रकाश पहुंचने से पाखण्डियों के उन सारे पाखण्डों का विनाश होगा। इसके लिए हमें अत्यधिक काम करना पडेगा। म.दयानन्द ने मनुष्यता की बात की है और अब सारी दुनिया के लोग भी मानवता की ही बात कर रहे है।' इस अवसर पर स्वामीजी ने दयानन्द का **'मनुष्य कौन है?'** यह सन्देश पढकर सुनाया। उन्होंने कहा कि, चैनलों पर चलनेवाली पौराणिक कथाओं की चर्चा न कर हमें वेद की कथाओं को, दयानन्द के मन्तव्यों को सुनाने के लिए आगे आना चाहिए, जिसके लिए हमें स्वतन्त्र चैनलों को शुरू करना होगा।

आर्य समाज के सन्दर्भ में बाबा रामदेवजी ने कहा - 'अब आर्य समाज को पहले जैसे जुनून को बढाना होगा। जातिमुक्त भारत बनाने के लिए नई पहल करनी होगी। जब तक महर्षि दयानन्द का एक भी शिष्य धरती पर है, तब तक वेदधर्म का लोप नहीं हो सकता।' हमें

अधिक मात्रा में प्रचारकों का निर्माण करना होगा। अन्य मत-पन्थों के पास भारी संख्या में प्रचारक व कार्यकर्त्ता हैं और आर्य समाज के पास कितने हैं? उनका मुकाबला करने के लिए हमें विद्वानों व प्रचारकों का निर्माण करना पडेगा। इस दृष्टि से आनेवाले समय में ५०० संन्यासी बनाने का हमारा संकल्प है। म.दयानन्द के मन्तव्यानुसार हमने स्त्रियों तथा पिछडी जाति के वर्गों के लिए वेदज्ञान के द्वार खोल दिये है। जब कि अन्य संन्यासी कुछ जातिविशेष को ही वेद पढाते। इसलिए अब हमें केवल कहने मात्र से नहीं, बल्कि प्रत्यक्ष रूप से जातिमुक्त भारत के नवनिर्माण के लिए प्रयत्न करने होंगें।

आधुनिक भारत के निर्माण में सर्वमान्य सर्वाधिक योगदान महर्षि दयानन्द का ही है, यह सभी को मानना ही होगा। सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक, धार्मिक, आध्यात्मिक, वैश्विक आदि... किसी भी रूप में देखों! भारत की प्रतिष्ठा करनेवाले म.दयानन्द ही थे। सभी प्रकार के आन्दोलनों में म.दयानन्द और आर्य समाज के ही अनुयायी थे! उसी अतीत को मात्र केवल कहनेमात्र से नहीं, बल्कि हृदय में संजोकर अखण्ड पुरुषार्थ से उसे वर्तमान समाज में फैलाने के लिए प्रयत्न करने पडेंगें! महर्षि दयानन्द का कोई अनुयायी खडा हो तो, उसके व्यक्तित्त्व से दीखना चाहिए कि कोई साक्षात् म.दयानन्द ही सम्मुख आकर खडे हैं, ऐसा व्यक्तित्त्व हम आर्यों को होना चाहिए, यही तो सही शिष्यत्त्व है। यदि हम स्वामीजी को गुरु मानते हो, तो उनका चरित्र हममें उतरना चाहिए। इसी संकल्प को हमें यहां इस सम्मेलन में धारण करना चाहिए।

'आर्य संगठन के विषय में बाबा रामदेवजी ने कहा कि इस संगठन कोई भी तोड नहीं सकता है, न छोड सकता है। हमारी पहली प्राथमिकता आर्य समाज संगठन को बढाने के लिए होनी चाहिए। आज आर्य समाज में जो बिखराव की स्थिति देखने मिल रही है, निश्चित ही उसका अन्त भी इस वर्ष हो जाएगा।'

हम सबको संकल्पित होना चाहिए कि हमारे आराध्य दयानन्द हैं। बहुत सारे लोग बडा होने के बाद यह भूल जाते कि मैं गुरुकुल का स्नातक, आर्य समाज का सदस्य और महर्षि दयानन्द का अनुयायी हूं, यही खेद का विषय है। हम दयानन्द के शिष्य हैं, इस पर हमें गर्व होना चाहिए। महर्षि का त्यागी, तपस्वी, करुणामय, दयालु और विराट व्यक्तित्त्व हमारे सम्मुख आदर्श के रूप में उपस्थित है। मैं तो मानता हूं कि मेरा जन्म तो वेद, वैदिक संस्कृति, योग व म.दयानन्द की महिमा को मण्डित करने के लिए ही हुआ है। अत: पूरे बल के साथ मेकॉले की पाश्चात्य कुशिक्षा, कुसभ्यता

का अन्त करना होगा। मेकाले जो पाप करके गया था, उस पाप को हम धोकर दिखलायेंगें! हम कोई सामान्य नहीं, हम तो महर्षि दयानन्द के वैदिक विचारयुक्त जीवन जीनेवाले आर्य, नेक इन्सान है। अत: बढते अज्ञान, अन्याय व अभाव रूप शत्रुओं को समाप्त करने के लिए पुरजोर प्रयत्न करते रहेंगें।

दोपहर के सत्र में कई वैदिक विद्वानों, आर्य संन्यासियों व विदेश से पधारे आर्य प्रतिनिधियों के उद्बोधन हुए। रात्रि में राष्ट्रकवि हरिओम पवार व अन्य कवियों ने विभिन्न विषयों पर कविताएं प्रस्तुत कर श्रोताओं को प्रेरित किया।

(शेष अगले अंक में....)

* * *

समाचार दर्पण

कान्हा गुरुकुल का वार्षिकोत्सव सोत्साह संपन्न

नागपूर के समीपस्थ कान्हा आर्ष गुरुकुल महाविद्यालय, रुईखैरी का तीसरा वार्षिकोत्सव १० व ११ नवम्बर को सम्पन्न हुआ। इन दो दिनों में प्रात: व सायं आयोजित वेदपारायण यज्ञ, भजनोपदेश व प्रवचन कार्यक्रमों का लाभ विदर्भ, मराठवाडा व म.प्रदेश से पधारे आर्यजनों ने उठाया। यज्ञ के ब्रह्मापद को आचार्य डॉ.अखिलेशजी शर्मा ने सुशोभित किया। मुख्य वक्ता के रूप में आचार्य आर्यनरेशजी(हिमाचल), गुरुकुल पौन्धा देहरादून के आचार्य श्री धनंजयजी, डॉ.नरेन्द्रजी शिंदे(शास्त्री), सोममुनिजी, डॉ.नयनकुमार आचार्य आदि पधारे थे। ग्वालियर(म.प्र.)से पधारे आर्य भजनोपदेशक पं.अशोककुमारजी शास्त्री ने मधुर भजनों की प्रस्तुति की। गुरुकुल प्रधानाचार्य श्री धर्मवीरजी ने उपस्थित आर्यजनों के प्रति कृतज्ञता व्यक्त की। इस अवसर पर तासके परिवार द्वारा स्व.दगडुबाई केरबाजी तासके की स्मृति में नवनिर्मित ग्रन्थालय भवन का उद्घाटन मान्यवरों के शुभकमलों से हुआ। उत्सवपर पधारे दानदाताओं व स्नातकों का घडियाल, शॉलवस्त्र व स्मृतिचिन्ह प्रदानकर सन्मान भी किया गया। इस समारोह में स्नातक मण्डली सर्वश्री भानुप्रकाश शास्त्री(दिल्ली), मनीष आर्य, प्रा.अरुण चव्हाण, प्रा.सोमदेव शास्त्री, प्रमोद शास्त्री, सहजानन्द शास्त्री, राजेन्द्र वलाकटे, माधव शास्त्री आदि उपस्थित रहे। समारोह की सफलता के लिए गुरुकुल के आचार्य धर्मवीरजी, गुरुकुल संचालन समिति के प्रधान श्री शुचिव्रतजी तासके, मन्त्री संजीवजी पेन्धे तथा सर्वश्री विठ्ठलराव कदम, संतोषराव देशमुख, सौ.सुमनताई आर्या एवं सदस्य गोविन्दरावजी तासके व पदाधिकारियों ने प्रयत्न किये।

परोपकारिणी सभा का निर्विरोध निर्वाचन

डॉ.वेदपालजी प्रधान तथा कन्हैयालाल आर्य मन्त्री बनें

महर्षि दयानन्द की उत्तराधिकारिणी 'परोपकारिणी सभा' के पदाधिकारियों का निर्वाचन दि.१८ नवम्बर को सम्पन्न हुआ, जिसमें सभी सदस्यों ने प्रधान के रूप में प्रसिद्ध वैदिक विद्वान प्रो.डॉ.वेदपालजी (मेरठ, उ.प्र.)का तथा मन्त्री के रूप में कर्मठ आर्य व्यक्तित्त्व श्री कन्हैयालालजी आर्य(गुरुग्राम- हरियाणा)का चयन किया गया। नूतन कार्यकारिणी इस प्रकार है -

संरक्षक –श्री गजानन्दजी आर्य / डॉ.सुरेन्द्रकुमारजी

प्रधान –डॉ.वेदपालजी

उपप्रधान – श्री ओममुनिजी,प्रा.श्री राजेन्द्रजी जिज्ञासु एवं शत्रुघ्नजी आर्य

मन्त्री – श्री कन्हैयालालजी आर्य

संयुक्त मन्त्री–डा.श्री दिनेशचन्द्रजी शर्मा

कोषाध्यक्ष–श्री सुभाषजी नवाल

पुस्तकाध्यक्षा– श्रीमती ज्योत्स्ना 'धर्मवीर'

अन्तरंग सदस्य–डॉ.राजेन्द्र विद्यालंकार

श्री वीरेन्द्र आर्य

कार्यकारिणी सदस्यों की कुल संख्या २३ है। नये पदाधिकारियों व कार्यकारिणी का अभिनन्दन व भविष्यकालीन यशस्वी कार्यों के लिए शुभकामनाएं !

ऐसे थे स्वामी श्रद्धानन्दजी...

ॐ स्वामी श्रद्धानन्द जी की भारत को देन उनकी सत्य में श्रद्धा है। स्वामी श्रद्धानन्द यह नाम ही उनकी उस भावना का परिचायक है। उनके लिए सत्य और जीवन एक हो गये थे। सत्य ही जीवन था और जीवन ही सत्य था। उनकी मृत्यू उनके निर्भीक अनथक प्रयत्नों के अमर चित्रों को आलोकित करती हुयी एक प्रकाश किरण की तरह हमारे सामने आती है। – **कवि रवीन्द्रनाथ ठाकुर**

ॐ स्वामी श्रद्धानन्द जी का उत्कृष्ट उदाहरण युवा पीढियों के लिए स्फूर्ति का स्रोत होगा, जो सदा उनमें आत्मत्याग, तपस्या और कष्ट सहन की भावना का विकास करने वाला होगा। – **पं.मदनमोहन मालवीय**

ॐ स्वामी श्रद्धानन्द जी की याद आते ही १९१६ का दृश्य मेरी आँखों के सामने खडा हो जाता है। सरकारी सिपाही फायर करने की तैयारी में हैं, स्वामी जी छाती खोलकर आते हैं और कहते हैं, 'लो चलाओ गोलियां।' उस वीरता पर कौन मुग्ध नहीं हो जाता? मैं चाहता हूँ कि उस वीर संन्यासी का स्मरण हमारे अन्दर सदैव वीरता और बलिदान के भावों को भरता रहे। – **सरदार वल्लभ भाई पटेल**

।।ओ३म्।।

माझा मराठाची बोलु कवतिके । परि अमृतातेही पैजेसीं जींके ।
ऐसी अक्षरेंचि रसिकें । मेळवीन ।। (संत ज्ञानेश्वर)

मराठी विभाग

उपनिषद संदेश — संन्यासी - कर्तव्य...!

नाविरतो दुश्चरितान्नाशान्तो नासमाहित:।
नाशान्तमानसो वापि प्रज्ञानेनैनमाप्नुयात्।। (कठोपनिषद्-५/८)

अर्थ– जो दुराचारापासून अलिप्त नाही, ज्याच्या मनाला शांती नाही, ज्याचा आत्मा योगी नाही, ज्याचे मन शांत नाही त्याने संन्यास घेतला, तरीही प्रज्ञानाच्या द्वारे त्याला परमेश्वराची प्राप्त होत नाही. म्हणून,

यच्छेद् वाङ्मनसी प्राज्ञस्तद्यच्छेद् ज्ञान आत्मनि।
ज्ञानमात्मानि महति नियच्छेत्तद्यच्छेच्छान्त आत्मनि।।(कठोपनिषद्-५/८)

अर्थ– बुद्धिमान संन्याश्याने वाणीला व मनाला अधर्मापासून परावृत्त करावे व त्यांना ज्ञान व आत्मा यांच्या ठिकाणी लावावे. मग त्या ज्ञानाला व स्वात्म्याला परमात्म्यामध्ये तल्लीन करावे. या मार्गाने प्राप्त होणाऱ्या विज्ञानाला शांतस्वरूप आत्म्यामध्ये स्थिर करावे.

दयानंद वाणी — हाच खरा मानवता धर्म...!

जो मननशील असेल आणि इतरांची सुखदु:खे व लाभहानी ही आपलीच आहेत, असे समजेल, त्यालाच मनुष्य म्हणावे. माणसाने अन्याय करणाऱ्या बलवानाशी भित कामा नये व धर्मपरायण दुबळ्यालाही भ्यावे. इतकेच नव्हे तर आपल्या सर्व सामर्थ्यानिशी धर्मात्म्यांचे रक्षण, उन्नती व प्रियाचरण करावे. मग ते धर्मात्मे अत्यंत अनाथ, दुर्बळ व गुणरहित असेल तर हरकत नाही. तसेच जर एखादा धर्मी चक्रवर्ती, सनाथ, महाबलवान आणि गुणवान असला तरीही त्याचा नाश, अवनती व अप्रियाचरण माणसाने सदैव करावे. अर्थात् शक्य असेल तोपर्यंत अन्याय करणाऱ्यांच्या सामर्थ्यांची हानी व न्यायी लोकांच्या सामर्थ्याची उन्नती त्याने नेहमी करावी. हे करीत असतांना त्याला कितीही दारूण दु:ख भोगावे लागले. किंबहुना प्राणही द्यावा लागला तरी त्याने या माणुसकीरूपी धर्माचा त्याग कधीही करू नये.

(स्वमन्तव्यामन्तव्यप्रकाश:)

म.दयानंदांचे राजकीय तत्त्वज्ञान : एक चिंतन

- प्रा.सुधाकर कुलकर्णी

महर्षी दयानंद हे भारतीय राष्ट्रवादी परंपरेचे अध्वर्यू होते. सत्य व ज्ञानाच्या शोधात भटकंती केल्यानंतर मथुरेला विरजानंदांशी त्यांची भेट झाली. त्यांच्या मार्गदर्शनात दयानदांनी वेदांचा सखोल अभ्यास केला. गुरुंची आज्ञा मानून भारतभर वेदांचा प्रसार व्हावा, याकरिता मुंबई येथे आर्य समाजाची स्थापना केली. हिन्दीमधून ग्रंथ लिहिले. सत्यार्थप्रकाश व ऋग्वेदादिभाष्य भूमिका हे त्यांचे अत्यंत मौलिक ग्रंथ होते.

वेद अपौरुषेय असून संपूर्ण ज्ञान वेदांत सामावून आहे, ही त्यांची श्रद्धा होती. म्हणूनच त्यांची भारतीयांना **'वेदांकडे परत चला'** असा संदेश दिला. त्यांचा उल्लेख **'वैदिक विचारांचे दूत'** असा केला जातो. वेद विस्मरणामुळे भारतीयांची अधोगती झाली व इंग्रजांच्या वर्चस्वाखाली भारतीयांना राहावे लागत आहे, ही भूमिका मांडून वेदकालीन व्यवस्थेचे पुनरुज्जीवन करण्यावर त्यांनी भर दिला. परकीयांचे राज्य स्वराज्याची कधीच बरोबरी करू शकणार नाही, ही भारतीयांना शिकवण देऊन त्यांनी आदर्श राष्ट्रवादाचा पाया घातला.

राज्यव्यवस्था ही धर्म व नैतिकतेच्या मजबूत पायावर उभी असल्याशिवाय समाजोन्नती होऊ शकत नाही, असे सांगून वेद व मनुस्मृतीवर आधारित आदर्श राज्यव्यवस्थेचे प्रारुप सत्यार्थप्रकाश ग्रंथातील सहाव्या विभागात सांगितले आहे. तसेच ऋग्वेदादिभाष्यभूमिकेतही वर्णन आले आहे- 'आदर्श शासन प्रकार कोणता? हे माणसापेक्षा ईश्वरालाच माहीत असल्यामुळे वेदात जो प्रकार सांगितला तोच आदर्श मानावा!' ही त्यांची वेदांवरील निष्ठा बोलते.

मनुस्मृतीमधील राजतंत्राचा सिद्धांत आणि वेदांमधील विविध सभा व निवडणुकीची लोकतंत्रात्मक तत्त्वे यांचा त्यांच्या राजकीय तत्त्वज्ञानात समन्वय साधण्यात आला आहे. निर्वाचित राजाची पात्रता सांगितली आहे. वेदविद्यासंपन्न, चारित्र्यसंपन्न, निर्व्यसनी, चतुर व बुद्धिमान व्यक्तीच राजाची पात्रता धारण करणारी असते. परंतु राजाला अनियंत्रित सत्ता सोपविण्यास त्यांचा विरोध आहे. अनियंत्रित राजा प्रजेच्या नाशाला कारणीभूत ठरेल. म्हणून त्यांनी सत्तानियंत्रणाचे व संतुलनाचे सूत्र सांगितले आहे.

महर्षी दयानंदांनी असे स्पष्ट केले

आहे की, राजा जो की सभापती असतो, त्याच्या आधीन सभा असावी, सभेच्या आधीन राजाने राहावे. राजा व सभा यांनी प्रजेच्या आधीन राहावे. आणि प्रजेने राजा व सभेच्या आधीन राहावे. या सूत्रामधून त्यांनी निर्वाचित व मर्यादित राजतंत्राचा समन्वय साधला आहे.

राज्यसभा, धर्मसभा व विद्यासभा या निर्वाचित असाव्यात आणि त्यांमधील सदस्यत्वासाठी विशिष्ट शैक्षणिक पात्रता असावी, याचा उल्लेख असून गुणवत्ता हेच लोकतंत्राचे महत्त्वाचे गमक असल्याचे सांगितले. राजाला राज्यकारभारात सल्ला देण्यासाठी गुणवंत मंत्र्यांची नेमणूक करण्याचा सल्ला देऊन लोकतंत्र व्यवस्था असण्यावर भर दिला. त्यांच्या या विचारातून सत्ताविभाजनाचे तत्त्व शोधता येते.

सत्तेच्या विकेंद्रीकरणावरही त्यांनी विचार मांडला होता. सत्ता हे केंद्रातून गावपातळीपर्यंत आणि विकास गावापासून केंद्रापर्यंत व्हावा या दृष्टीने ग्रामप्रशासनाचा त्यांनी विचार मांडला. प्रत्येक गावात एक अधिकारी, दहा गावावर दुसरा, वीस गावांवर तिसरा, शंभर गावावर चौथा, हजार गावांवर पाचवा अधिकारी यानुसार पदसोपान परंपरेनुसार अधिकाऱ्यांची श्रृंखला तयार होते. हे अधिकारी व्यवस्थित कार्ये करतात का ? त्यावर नियंत्रण करण्यासाठी एक अधिकारी व एक स्थायी अधिकारी अशी दोन पदे प्रत्येक दहा हजार गावांवर नेमून गावचे अहवाल सभेपर्यंत आणि सभेने घेतलेल्या निर्णयांची अंमलबजावणी व कायदे गावापर्यंत ही व्यवस्था सांगितली.

कायद्याच्या राज्याच्या तत्त्वाचा त्यांच्या राजकीय तत्त्वज्ञानात अंतर्भाव असल्याचे दिसून येते. सत्यार्थप्रकाशानुसार कायदा हाच खरा राजा असतो. कायदा न्याय प्रदान करतो. बुद्धिमान लोक कायद्याला आपला रक्षक मानतात. कायद्याची अंमलबजावणी यथायोग्य करण्यात आली, तर सर्व लोक सुखी होतील व सर्व प्रजाजनांचे रक्षण होईल. परंतु अविचाराने कायद्याची अंमलबजावणी झाल्यास सर्वांचाच विनाश होईल. त्यांच्या मते कायद्याचे स्थान राजापेक्षाही श्रेष्ठ असते. तसेच कायद्याच्या अंमलबजावणीसाठी कोणाचाही अपवाद नसतो !

राज्यामध्ये कोणीही गुन्हेगार असेल तर त्याला दंड झालाच पाहिजे. राजा जेंव्हा न्यायासनावर बसतो तेंव्हा त्याने निष्पक्ष न्याय द्यावा आणि ज्या अपराधाबद्दल राजाच जबाबदार असेल, त्याबद्दल राजाला धर्मसभेने दंड करावा. ज्या अपराधाबद्दल साधारण मनुष्याला सुमारे एक पैसा दंड होतो, त्याच अपराधाबद्दल राजाला सुमारे हजार पैसे दंड असावा. मंत्री किंवा दिवाण यांना

आठशपेट याचप्रमाणे कमी जास्त योग्यता असेल, त्याला कमी जास्त दंड आकारण्यात यावा. साधारण शिपायाला आठपट दंड असावा. साधारण प्रजाजनापेक्षा राजपुरुषाला जास्त दंड करणे योग्य आहे. असे न केले तर राजपुरुष सर्व प्रजेला फार त्रास देतील. ही त्यांची भूमिका आज अस्तित्वात आणल्यास शासनातील बरेच दोष कमी होतील.

तद्वतच ज्ञान, प्रतिष्ठाण आणि विद्वता व योग्यता जशी असेल, त्यानुसार कमी जास्त दंड करावा, असेही त्यांनी प्रतिपादन केले आहे. या तत्त्वानुसार शूद्र, वैश्य, क्षत्रिय आणि ब्राह्मण यांना होणारे दंडाचे प्रमाण वाढत जाते. याप्रमाणे त्यांनी कायद्याला श्रेष्ठत्व देऊन न्याययुक्त दंड हाच खरा राजा आहे आणि तोच धर्म आहे अशी भूमिका मांडली.

राज्यसंस्थेच्या कल्याणकारी स्वरूपाचाही त्यांनी विचार मांडला. **'सर्वांचे सर्वतोपरी कल्याण'** हा राज्यसंस्थेचा हेतू प्रतिपादन केला. राज्यसंस्थेने धर्म, अर्थ, काम व मोक्ष प्राप्त करून घेता येईल, याकडे लक्ष वेधून सर्वांचा आध्यात्मिक व भौतिक विकास साधला पाहिजे यावर त्यांनी भर दिला. त्यामध्ये वर्णव्यवस्था गुणकर्मावर आधारित असणे, वर्णामध्ये गुणांवर आधारित बदल करता येणे, विवाहाचे वय, सर्ववर्णीय स्त्री-पुरुषांसाठी अनिवार्य शिक्षण, शिक्षणामध्ये नागरी व लष्करी दोन भाग करणे परंतु लष्करी शिक्षण कांही प्रमाणात अनिवार्य असणे, अपंग व निराधार यांची व्यवस्था, अनाथ मुलांचे संगोपन, वृद्धांची काळजी, सेवानिवृत्तांना अर्धे वेतन, मुलांना गुणकर्मानुसार नौकरी, युद्धात मारल्या गेलेल्या सैनिकांच्या विधवांना मदत, नागरिकांवर मर्यादित कर, परंतु मोबदल्यात सोई, या सर्वांचा विचार जो आज केला जातो, त्याचा पाया महर्षी दयानंदांच्या विचारात आढळून येतो.

महर्षी दयानंदांच्या विचारांची आज भारतात पूर्वीच्या तूलनेत जास्त गरज भासते. धर्म व नैतिकतेपासून राजकारणाची फारकत झाल्यामुळे भारतात गुन्हेगारी व नैतिक अध:पतन होत आहे. गुन्हेगारांचे राज्यकर्ते पाठिराखे असल्यामुळे आम्ही विनाशाच्या मार्गाने जात आहोत हे नाकारणे कठीण आहे.

राजा व राज्यसभा, धर्मसभा व विद्यासभा यातील सदस्यांची पात्रता सांगून या सभांची जनतेने निवडणुकीतून रचना करणे व तीन सभांनी त्यांच्यातील अधिक गुणवानाला सभापती (राजा) निवडणे म्हणजे लोकसत्ताक विद्वानांचे प्रजेवर प्रजेच्या संमतीने चालणारे राज्य निर्माण करण्यावर त्यांनी भर दिला. आज शिक्षण व चारित्र्य यांची मंत्री व आमदार-

खासदारांना अट नसल्यामुळे 'आदर्श राज्य' कसे निर्माण होईल? त्यांचे विचार वाचतांना प्लेटोच्या तत्त्वज्ञ राजाची आठवण येते. राज्यकर्त्यांच्या स्वार्थ व अज्ञानामुळे प्रजा दुःखी असते, म्हणून भारतीयांनी त्यावर लक्ष केंद्रित केले पाहिजे.

त्यांनी मांडलेल्या स्वदेशी व स्वराज्याची कल्पना चिरंतन स्वरूपाची आहे. आज निवडणुकांची दुर्दशा, घराण्याचा वारसा, गुन्हेगार मंत्री त्यांच्याविरुद्ध वॉरंट असूनही पदावर सन्मानाने राहणे, याबाबत सर्व पक्षांनी एकमेकांना सांभाळून घेणे हे बघितल्यास लोकशाहीच्या नावावर गुंडशाही चालत असल्याचे मान्य करावे लागते. मूल्यशिक्षणाच्या कमतरतेमुळे दहशतवाद, बाँबस्फोट, बलात्कार, असुरक्षित जीवन या सर्व गोष्टी कल्याणकारी राज्यात सर्वत्र वाढताना दिसतात. यावर उपाय म्हणजे दयानंदांनी त्यांनी सांगितलेली 'वेदांकडे परत चला' ही शिकवण योग्य वाटते. त्याचा अर्थच नैतिक मूल्यांचे जतन करा, हा आहे.

गाव मध्यबिंदू मानून अधिकाऱ्यांची पदसोपान परंपरा व गावाच विकास या संदर्भात ७३ व ७४ व्या घटना दुरुस्तीचा संदर्भ जोडता येण्यासारखा आहे. महर्षी दयानंदांनी भारत हा भारतीयांचा आहे, ही धारणा भारतीयांच्या मनात निर्माण केली व हिन्दीला संपर्क भाषेचा दर्जा दिला. आज या दोन्ही गोष्टींना अत्यंत महत्त्व आहे. म. गांधींनी त्यानंतर जे विचार मांडले व त्या तत्त्वांच्या आधारावर चळवळी चालविल्या. त्यांचा उल्लेख महर्षी दयानंदांच्या तत्त्वज्ञानात सापडतो. त्यातील स्वराज्य, स्वदेशी, वर्णव्यवस्था, अस्पृश्यतानिर्मूलन, स्त्री-पुरुष समानता व सर्वांना शिक्षण, ग्रामप्रशासन इ. महत्त्वाची होत.

'सर्व ज्ञान वेदांमध्ये सामावले आहे व वेदांकडे परत चला' ही त्यांची भूमिका अर्वाचीन काळातील विश्वव्यवस्थेच्या संदर्भात आणि अनेकधर्मीय भारतामध्ये, जिथे धर्मनिरपेक्षतेची नवी कल्पना रूढ होते आहे, तिथे किती प्रमाणात लागू पडेल ते सांगणे कठीण आहे. परंतु ब्रिटीशकालीन भारतात भारतीयांत आत्मसम्मान व राष्ट्रीयत्वाची प्रखर भावना निर्माण करण्यात त्यांचा सिंहाचा वाटा राहिला आहे, हे मान्य करावे लागले.

उपरोल्लिखित सर्वच भूमिकेतून उक्ती, कृती व व्यक्तिमत्त्व या संदर्भात महर्षी दयानंद सरस्वती वर्तमानकालीन भारतातील राजकीय विचारांचे खऱ्या अर्थाने दीपस्तंभ ठरतात.

(लेखक लातूरच्या महात्मा बसवेश्वर महाविद्यालयातील राज्यशास्त्र विभागाचे निवृत्त प्राध्यापक आहेत.)

१०१व्या जन्म वर्षानिमित्त...

पू.हरिश्चंद्र गुरुजी(श्रद्धानन्दजी)चा पाळणा

कवयित्री : सौ.लीलावती राजेंद्र जगदाळे

सन एकोणीसशे अठरात, पूण्यभूमी औराद गावात
बाळ जन्मले महाराष्ट्रात - जो बाळा जो रे जो ... ।।१।।

मुगल साम्राज्यातून पलायन केले, निजामशाहीत आश्रय घेतले
धाराशिव जिल्ह्याचे रहिवासी झाले - जो बाळा जो रे जो ... ।।२।।

मात्यापित्याचे पहिले मुलं, सूर्यवंशी वंशाचे देशमुख कुळ
घराणे सांगलीचे ते मूळ - जो बाळा जो रे जो ... ।।३।।

प्राथमिक शिक्षण पार पडले, गावचे आदर्श शिक्षक बनले
साक्षर जना करून सोडले - जो बाळा जो रे जो ... ।।४।।

संत-महंताचा मराठवाडा, पिता रामराव झाला हो वेडा
पुत्र हरिश्चंद्राने उचलला विडा- जो बाळा जो रे जो ... ।।५।।

सारे जीवन ब्रह्मचारी राहायचे, हुशार विद्यार्थी शोधून काढायचे
मानव बनण्याचे धडे शिकवायचे - जो बाळा जो रे जो ... ।।६।।

संसारात त्यांचा जीव रमेना, समाजकार्याचा थकवा येईना
चालत्या पावलांची गती थांबेना - जो बाळा जो रे जो ... ।।७।।

गाव-तालुक्याहून जिल्ह्याबाहेर, तिन्ही राज्यांना केले तडीपार
आंध्रा, कर्नाटक, महाराष्ट्रात प्रचार - जो बाळा जो रे जो ... ।।८।।

नावाची त्यांच्या दहशत वाटे, जुलमी सत्तेच्या मार्गात काटे
रोहिले रझाकार धुळ हो चाटे - जो बाळा जो रे जो ... ।।९।।

जुलमी रझाकार जुलूम करता, उखडावी वाटे त्यांची ती सत्ता
ठरले कर्दनकाळ तिघांच्या करिता - जो बाळा जो रे जो ... ।।१०।।

नूतन विचारांचा नवोदय झाला, आर्य समाज स्थापन केला
राष्ट्र निर्मितीचा पाया हो भरला - जो बाळा जो रे जो ... ।।११।।

क्रांतीचे जाज्ज्वल्य विचार रूजले, परिवर्तनाचे मन पेटून उठले
मुक्ती संग्रामाचे रण हो रंगले - जो बाळा जो रे जो ... ।।१२।।

कित्येक आंदोलन छेडून झाले, पंजाब दिल्लीत सजा भोगले
परिणामी ते यशस्वी झाले - जो बाळा जो रे जो ... ।।१३।।

वनवन फिरले विद्यार्थ्यांसाठी, पायीच चालून घेतसे भेटी
प्रसंग पडता उपवासी पोटी - जो बाळा जो रे जो ... ।।१४।।

राष्ट्र उत्थानाची वाटे गरज, मानवता संस्कार शिबिर त्यांची उपज
साऱ्या विश्वात व्यापली आज - जो बाळा जो रे जो ... ।।१५।।

आंतरजातीय विवाह जोडले, स्वभाव साम्यतेला प्राधान्य दिले
वेद संदेशाचे पालन केले - जो बाळा जो रे जो ... ।।१६।।

३० डिसेंबर एकोणविसशे शहान्नवे, श्वेत वस्त्र ते झाले भगवे
ब्रह्मचारी बनले सन्याशी नवे - जो बाळा जो रे जो ... ।।१७।।

भगव्या गुरुंचे मेधावी शिष्य, भावी भारताचे समृद्ध भविष्य
जीवित श्राद्धातून घेतला आशीष - जो बाळा जो रे जो ... ।।१८।।

गुरुकुल शिक्षणाचे महत्त्व जानिले, महाराष्ट्रात दोन उभे हो केले
प्राचीन प्रणालीला साकार केले - जो बाळा जो रे जो ... ।।१९।।

किती सत्कार पुरस्कार मिळाले,जीवनाचे मोल जगून कळाले
वृद्धापकाळात हरवले मळे - जो बाळा जो रे जो ... ।।२०।।

शताब्दी वर्ष येऊन ठेपले, जीवनफळ हो मधुर झाले
अपूर्व सोहळ्यात न्हाऊन निघाले - जो बाळा जो रे जो ... ।।२१।।

धन्य झाले हो उत्सव पाहून, चराचर घाले अभिवादन
आमुचे तुम्हाला शत्-शत् नमन, वंदन - जो बाळा जो रे जो ... ।।२२।।

- 'मधुगंध', योगेश्वरी नगर,
नवीन पॉवर हॉउसमागे, जिंतूर रोड, परभणी
मो.८४५९८६२२८०

***

दिल्लीच्या महासंमेलनात मराठीचा गजर...

- ओम कुरूडे(नांदेड)

नवी दिल्ली येथे दि.२५ ते २८ ऑक्टोबर दरम्यान जागतिक स्तरावर आयोजित आंतरराष्ट्रीय आर्य महासंमेलनात महाराष्ट्राच्या विविध कानाकोपऱ्यातून आलेल्या जवळपास ५०० आर्यजनांनी उत्साहाने सहभाग घेतला. लातूरहून आलेल्या सव्वाशे आर्यवीरदल सैनिकांनी सादर केलेल्या ढोल-ताशा व छत्रपती शिवराय-मावळयांच्या देखाव्याने प्रेक्षकांच्या डोळ्याचे पारणे फेडले. राज्य आर्यवीरदल अधिष्ठाता श्री व्यंकटेश हालिंगे, बालाजी नरवाडे व इतरांनी याकरिता विशेष पुढाकार घेतला. चार दिवसीय प्रमुख सर्व कार्यक्रमांना पुणे, नासिक, जळगांव, लातूर, उस्मानाबाद, सोलापुर, नांदेड, धर्माबाद, परळी, किल्लेधारुर, निलंगा, शिवणखेड, औरंगाबाद, धुळे तसेच नागपुर, अमरावती, अकोला या व इतर ठिकाणाहुन आलेल्या असंख्य आर्यजनांनी यज्ञ-प्रवचन, भजन, व्याख्यान, चर्चासत्र आदी कार्यक्रमांत सहभागी होऊन लाभ घेतला. विविध आर्य कार्यकर्त्यांनी मोठ्या प्रमाणावर वैदिक साहित्य ही विकत घेतले. ठिकठिकाणचे आर्यजन परस्परांना भेटून आर्य संमेलनाचा आनंद घेतांना दिसून आले. महाराष्ट्रातील सर्व आर्य समाजातर्फे संकलित करण्यात आलेला भरीव निधी सभेचे कोषाध्यक्ष श्री उग्रसेन राठौर व व्यवस्थापक श्री रंगनाथ तिवार यांनी संमेलन कार्यालयात जमा केला.

सभेचे प्रधान योगमुनिजींचे भाषण -

संमेलनाच्या उद्घाटन समारंभात व इतरही विविध कार्यक्रमात महाराष्ट्र सभेचे प्रधान श्री योगमुनिजी व मंत्री श्री राजेंद्र दिवे यांची मुख्य मंचावर उपस्थिती होती. शेवटच्या दिवशी समारोप समारंभा अगोदर देशातील विविध प्रांतीय प्रतिनिधी सभांचे संमेलन पार पडले. यात महाराष्ट्राचे प्रधान श्री योगमुनिजी यांनी भजन गायिले व संमेलनाच्या संयोजकांना शुभेच्छा दिल्या.

दोन ग्रंथांचे जाहीर प्रकाशन -

संमेलनाच्या मुख्य मंचावरून महाराष्ट्राचे तपस्वी समाजसेवक पू.स्वामी श्रद्धानंदजींच्या सौ.लीलावती जगदाळे यांनी लिहीलेल्या हिंदी जीवनचरित्राचे प्रकाशन हिमाचलप्रदेशचे राज्यपाल श्री देवव्रत आचार्य व केंद्रीय सांसदीय कार्य राज्यमंत्री श्री विजय गोयल व इतर मान्यवरांच्या हस्ते तर **'योगदर्शन'** मराठी भाष्य ग्रंथ (अनुवादिका सौ.सविता ब.जोशी) यांचे प्रकाशन श्री गोविंद गिरी महाराज व इतरांच्या हस्ते पार पडले. यावेळी

सभाप्रधान योगमुनिजी, मंत्री राजेंद्र दिवे, कोषाध्यक्ष उग्रसेन राठौर, उपप्रधान दयाराम बसैये, प्रा.शरदचंद्र डुमणे, संजय जोशी, डॉ.नयनकुमार आचार्य, रोहित जगदाळे आदी उपस्थित होते.

चर्चासत्रात सहभाग -

आर्य महासंमेलनादरम्यान विविध विषयांवर राष्ट्रीय चर्चासत्रांचे आयेजन करण्यात आले होते. महाराष्ट्राच्या आर्य विद्वानांनी यात उत्स्फूर्तपणे सहभाग घेतला व आपले अभ्यासपूर्ण शोधनिबंध सादर केले. सर्वश्री विजयप्रसाद उपाध्याय (नाशिक), प्रा.डॉ.महेंद्रकुमार गौशाल(बीड), प्रा.डॉ.अखिलेश शर्मा(धुळे), प्रा.डॉ.नयनकुमार आचार्य(परळी), प्रा.डॉ.चंद्रशेखर लोखंडे (लातूर), विज्ञानमुनिजी(परळी) आदींनी शोधनिबंधांचे सादरीकरण, चर्चेत सहभाग व आयोजन या कार्यात मोलाची भूमिका बजावली.

अभिनंदन वार्ता

परळीचे स्नातक नरेश शास्त्री सैन्यदलात दाखल

परळीच्या श्रद्धानंद गुरुकुलचे यशस्वी स्नातक व अध्यापक श्री नरेश शास्त्री(कन्हेरे) हे नुकतेच भारतीय सैन्य दलातील धर्मगुरु(ज्युनियर कमिशनर ऑफिसर) या पदावर रुजु झाले.गुरुकुलात अध्ययन अध्यापना बरोबरच स्थानिक देशमुख महिला महाविद्यालयात त्यांनी ७ वर्षे संस्कृत विषयाचे अध्यापन केले आहे. याच दरम्यान त्यांनी 'धर्मगुरु' पदासाठीची परीक्षा दिली व त्यात ते यशस्वी ठरले. सुरुवातीची २ महिने रानीखेत (उत्तराखंड राज्य) येथील कुमाऊं सैनिकी केंद्रात शारीरिक प्रशिक्षण घेतले. त्यानंतर पुणे येथील दापोडी राष्ट्रीय एकता संस्थानात ९ महिन्यांचे धार्मिक व कर्मकांडीय प्रशिक्षण पूर्ण झाल्यानंतर त्यांची पहिली नियुक्ती अरूणाचल प्रदेशातील भारत-चीन सीमाभागातील 'यांगसे' येथे ३ नागा रेजिमेंटमध्ये 'धर्मगुरु' पदावर झाली. गुरुकुलीय शिक्षणपद्धती नुसार शास्त्री, साहित्याचार्य, एम.ए. बी.एड्. आदी संस्कृत योग्यता मिळवून अध्यापनाचा उत्तम अनुभव पाठीशी असलेल्या शांत, सौम्य व मितभाषी स्नातक श्री नरेश शास्त्री यांची सैन्यदलातील 'धर्मगुरू' पदावर नियुक्ती झाल्याबद्दल त्यांचे गुरुकुलवासी मुनिजन, शिक्षक आणि स्नातक मित्रांकडून अभिनंदन...!

माधवराव देशपांडे यांना 'आर्य कर्मवीर' पुरस्कार

महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधी सभेचे माजी मंत्री श्री माधवराव देशपांडे यांना मुंबई येथील काकडवाडी आर्य समाजातर्फे 'आर्य कर्मवीर' पुरस्कार प्रदान करण्यात आला. वैदिक धर्म प्रचार कार्य करणाऱ्या एका आर्य कार्यकर्त्याची दरवर्षी या पुरस्कारासाठी निवड केली जाते. यावर्षीचा हा पुरस्कार श्री देशपांडे यांना या संस्थेच्या वार्षिक उत्सव समारंभात दि.२ सप्टेंबर रोजी आर्य जगताचे प्रसिद्ध विद्वान डॉ.वागीशजी शर्मा यांच्या हस्ते प्रदान करण्यात आला. पुरस्काराची रोख रक्कम रू.१५ हजार, सन्मानपत्र, रजतपदक, श्रीफळ व शॉल देऊन त्यांना गौरविण्यात आले. यावेळी या संस्थेचे प्रधान श्री देशबंधू शर्मा, मंत्री श्री विजय गौतम, इतर पदाधिकारी, सौ.नलिनी देशपांडे यांच्यासह आर्यजन उपस्थित होते. सत्काराला उत्तर देतांना श्री देशपांडे यांनी महर्षी दयानंदांप्रती ऋण व्यक्त करून आभार मानले.

स्व.केशरबाईंच्या स्मरणार्थ राऊत कुटुंबातर्फे

आर्य सभेत ५१ हजारांचा स्थिरनिधी

मानवनिर्मित मत-पंथ व जातीपातीच्या निवारणासाठी कार्यरत लातूर येथील सक्रिय आर्य कार्यकर्ते श्री किशनरावजी राऊत यांनी आपल्या दिवंगत धर्मपत्नी स्व.सौ.केशरबाई राऊत यांच्या स्मरणार्थ ५१,०००/- (एकावन्न हजार) रूपयांचा निधी महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधी सभेस नुकताच प्रदान केला. जन्माने रूढ होत चाललेली मत-पंथ व जातीयतेची कुप्रथा नाहीशी व्हावी, याकरिता सभेतर्फे दरवर्षी वैदिक साहित्य प्रकाशनासारखे विधायक उपक्रम राबविण्यात यावेत व याकरिता वरील राशीची स्थिरनिधी (फंड) बँकेत स्थापन करून त्याच्या व्याजी रक्कमेचा उपयोग करण्यात यावा... असा यामागचा उद्देश आहे. श्री राऊत हे आर्य समाज विचारसरणीचे खंदे पुरस्कर्ते असून आंतरजातीय विवाह चळवळीचे संवाहक आहेत. त्यांचेसह भाऊ व मुला-मुलींचे आंतरजातीय विवाह झाले असून गेल्या २५ वर्षांपासून ते जातिप्रथा निर्मूलन केंद्र ही चालवितात. वरील निधी सभेस प्रदान केल्याबद्दल प्रधान श्री योगमुनिजी, मंत्री श्री राजेंद्र दिवे, कोषाध्यक्ष श्री उग्रसेन राठौर व इतर पदाधिकाऱ्यांनी श्री राऊत व कुटुंबियांचे अभिनंदन केले आहे.

(वार्ता विशेष) धारूरमध्ये वेदप्रचारास उत्तम प्रतिसाद

किल्लेधारूर येथे यावर्षीचा श्रावणी वेदप्रचार महोत्सव उत्साहात पार पडला. हिसार (हरियाणा)चे वेदप्रचारक पं.श्री आझादमुनिजी यांची विविध विषयांवरील अभ्यासपूर्ण प्रवचने आणि मुजफ्फरनगरचे भजनीक पं.कर्मवीरजी यांच्या भजनांना ऐकण्याकरिता श्रोत्यांची मोठी गर्दी जमली. यात विशेष करून महिलांची संख्या जास्त होती. पू.श्री सोममुनिजींनी उपस्थितांना मार्गदर्शन केले.

आर्य समाजाबरोबरच स्थानिक शैक्षणिक संस्थांमध्येही कार्यक्रम घेण्यात आले. हा कार्यक्रम यशस्वी करण्यासाठी आर्य समाजाचे प्रधान व सभेचे उपप्रधान श्री प्रमोदकुमारजी तिवारी, मंत्री ॲड.प्रमोदजी मिश्रा, कोषाध्यक्ष कमलाकर इंदुरकर, सोमनाथप्पा कांबळे, काशीनाथ चिंचाळकर, विश्वंभर नडगिरे, उद्धव खाडे, प्रविण जवकर, श्रृंगारे, थोरात गुरुजी व इतरांनी प्रयत्न केले.

अंजनडोहच्या शाळेत प्रबोधन

धारूरजवळील अंजनडोह या गावातही दोन दिवसांचा श्रावणी वेदप्रचार कार्यक्रम घेण्यात आला. यात पारिवारिक सत्संग व विद्यार्थ्यांकरिता प्रबोधनपर कार्यक्रमांचे आयोजन करण्यात आले होते. या वैदिक सत्संगात १०० हून अधिक महिला व पुरुष सहभागी झाले. गावातील नूतन माध्यमिक विद्यालयात पं.आझादमुनिजी **'नैतिक मूल्य संवर्धन'** या विषयावर मार्गदर्शन केले, तर पं.कर्मवीरजी यांनी देशभक्तिपर गीत सादर केले. वैजनाथ मुंडे याने उपस्थित केलेल्या शंकांचे पंडितजींनी उत्तमरित्या समाधान केले. परळीहून आलेले अभ्यासक पं.लक्ष्मणराव आर्य गुरुजी यांनीही यावेळी साध्या भाषेत मार्गदर्शन केले. कार्यक्रमाच्या सफलतेसाठी शाळेचे मु.अ. श्री ठोंबरे, सहशिक्षक श्री प्रकाश सोळंके, प्रधान श्री विठ्ठलराव आदमाने, मंत्री युवराज कांबळे, बाळु पंचभाई, विष्णुपंत व बाबुराव सोळंके, रामराव व गणेश कांबळे, जयश्री आदमाने आदींनी प्रयत्न केले.

शिवणखेडचा श्रावणी उत्सव आनंदात

ग्रामीण भागातील सर्वाधिक क्रियाशील आर्य समाज म्हणून आपली वेगळी ओळख निर्माण करणाऱ्या शिवणखेड (ता.चाकूर जि.लातूर) येथील आर्य समाजाचा श्रावणी वेदप्रचार उत्सव अतिशय आनंदात व उत्साहात संपन्न झाला. दि.१९ ते २५ ऑगस्ट दरम्यान दररोज सकाळी अनेक यजमानांच्या

उपस्थितीत बृहद्यज्ञ पार पडत असे. त्यानंतर उत्तर भारतातून आमंत्रित भजनोपदेशक पं.कर्मवीरजी आर्य यांचा सुश्राव्य भजनोपदेश होई. भजनानंतर आचार्य पं.आझादमुनिजींचे विविध विषयांवर प्रवचने पार पडत. त्याचबरोबर संध्याकाळी देखील भजनसंगीत आणि व्याख्यानाचे कार्यक्रम संपन्न होत असत.

श्रावणी यज्ञात यजमान म्हणून सौ.व श्री विजयपाल कुल्ले, सौ. व श्री तुकाराम आलापुरे, सौ.व श्री विद्यासागर आरदवाड, सौ.व श्री माधव आरदवाड, सौ.व श्री निवृत्ती आरदवाड, सौ.व श्री धनंजय शिंदे, सौ.व श्री भागवतराव आरदवाड, सौ.व श्री व्यंकटराव कुल्ले, सौ.व श्री चंद्रकांत पांचाळ, सौ.व श्री अशोकराव कुल्ले, सौ.व श्री चंद्रपाल आरदवाड, सौ.व श्री ओमप्रकाश पडीले, सौ.व श्री चंद्रकांत कुल्ले, सौ.व श्री आबासाहेब शिंदे, सौ.व श्री बसवराज पडीले, सौ.व श्री मारोती शिंदे, सौ.व श्री हरिभाऊ शिंदे, सौ.व श्री विद्यासागर आरदवाड यांची उपस्थिती होती. श्रावणी दरम्यान लातूरचे विद्वानदांपत्य सौ.कांचनदेवी व श्री पं.चंद्रशेखर शास्त्री व ॲड.श्री गलाले साहेब यांच्याही भजन व प्रवचनाचा कार्यक्रम पार पडला.

(शोकवार्ता) प्रा.शेषराव वांजरखेडे यांना पत्नीशोक

बीदर येथील आर्य कार्यकर्ते, निवृत्त प्रा.डॉ.श्री शेषरावजी वांजरखेडे यांच्या सुविद्य पत्नी सौ.रमादेवी यांचे दि.१० नोव्हेंबरला मध्यरात्री १.५०वा. कर्करोगाने दुःखद निधन झाले. मृत्युसमयी त्या ५८ वर्षे वयाच्या होत्या. त्यांच्या पश्चात् पति, दोन मुले, दोन मुली, सुन, जावई, नातवंडे असा परिवार आहे.

रमाबाई गेल्या कांही महिन्यांपासून आजारी होत्या. कुटुंबियांनी प्रयत्नांची शिकस्त करीत बीदर व इतर ठिकाणच्या खाजगी रुग्णालयात तज्ज्ञ चिकित्सकांकरवी उपचार करण्यात आले. या अकाली निधनाने परिवारावर दुःखाचा डोंगर कोसळला आहे. त्यांच्या पार्थिव देहावर पं.ज्ञानकुमार आर्य व डॉ.प्रकाश कच्छवा यांच्या पौरोहित्याखाली वैदिक पद्धतीने अंत्यसंस्कार करण्यात आले. यावेळी महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधी सभेचे मंत्री श्री राजेंद्र दिवे, आर्य वैज्ञानिक डॉ.बी.एम. मेहेत्रे, विजयकुमार कानडे यांच्यासह आर्यजन व प्रतिष्ठित नागरिक उपस्थित होते. तिसऱ्या दिवशी आयोजित शांतियज्ञात प्रा.श्री वांजरखेडे यांनी दिवंगत सौ.रमादेवीच्या स्मरणार्थ सत्यार्थ प्रकाश वितरणाकरिता रू.११ हजारांची धनराशी व वेदप्रचाराकरिता रू.५१ हजारांची स्थिरनिधी म.आर्य प्र.सभेत स्थापन करण्याची घोषणा केली.

स्वा.सै.पत्नी रुक्मिणीबाई होळीकर यांचे देहावसान

आर्य समाजाचा सुधारणावादी दृष्टिकोण कृतीत आणणाऱ्या सामाजिक कार्यकर्त्या व स्वा.सै. पत्नी श्रीमती रुक्मिणीबाई वासुदेवराव होळीकर यांचे दि.३ डिसेंबर २०१८ रोजी सायंकाळी ६.१५ च्या सुमारास वार्धक्याने दुःखद निधन झाले. त्या ९७ वर्षे वयाच्या होत्या.

त्यांच्या पश्चात् ख्यातनाम अभ्यासक विद्वान प्रा.ओमप्रकाशजी होळीकर (विद्यालंकार) यांच्यासह ४ मुले, ३ मुली, सुना, जावई, नातू-पणतू असा विशाल परिवार आहे. श्रीमती होळीकर यांनी आपले पति स्वा.सै.श्री वासुदेवरावजी यांनी अवलंबिलेल्या शैक्षणिक, सामाजिक, राष्ट्रीय कार्यात मोठे योगदान दिले आहे. होळी, पानचिंचोली, कवठा इ. गावातील मुलांना शिक्षणाची सोय उपलब्ध करून देण्याकरिता पति श्री वासुदेवरांनी पानचिंचोलीत लोकमान्य शिक्षण संस्थेची स्थापना केली. तेंव्हा त्याकाळी श्रीमती रुक्मिणीबाईंनी आपल्या घरात सर्व घटकातील मुलांची भोजन व निवासाची व्यवस्था केली आणि तितक्याच वात्सल्यपूर्ण मातृहृदयाने सेवाशुश्रूशाही केली...! दीन-दलित, गरीब व होतकरू विद्यार्थ्यांना कोणताही भेदाभेद न बाळगता मायेची सावली प्रदान केली. त्याचबरोबर वेदप्रचारासाठी गावी येणाऱ्या विद्वान, आर्य कार्यकर्ते व अतिथी जनांच्या आतिथ्यसेवेसाठी त्यांचा राबता हात नेहमीच उत्साहवर्धक ठरे. शांत, सरल व प्रेमळ स्वभावाच्या माता रुक्मिणीबाई या अल्पशिक्षित असूनही ज्ञानप्रसारकरिता नेहमी तत्पर राहिल्या. पति श्री वासुदेवरावजी यांनी हैद्राबाद स्वातंत्र्य संग्रामात भाग घेतला. त्यांना गुलबर्गा व कंचनगुडा येथील तुरुंगात ६ महिने कैद झाली. तेंव्हा श्रीमती होळीकरांनी प्रतिकूल परिस्थितीला सामोरे जात मोठ्या धैर्याने कुटुंबाचे संगोपन व सामाजिक कार्याची जबाबदारी नेटाने सांभाळली आणि समाजासमोर एक प्रेरक आदर्श ठेवला. त्यांच्या पार्थिव देहावर पानचिंचोली या मुळगावी शोकाकुल वातावरणात अंत्यसंस्कार करण्यात आले. यावेळी विविध क्षेत्रातील मान्यवर उपस्थित होते.

दोन्ही दिवंगत आत्म्यांना सर्व आर्य समाज व म.आ.प्र. सभेतर्फे भावपूर्ण श्रद्धांजली! शोकाकुल कुटुंबियांच्या दुःखात आर्यजन सहभागी आहेत.

॥ कृण्वन्तो विश्वमार्यम् ॥

श्रेष्ठ मानव बनों ! वेदों की ओर लौटो !

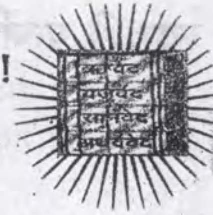

वेद प्रतिपादित मानवीय
जीवन मूल्यों को
जन-जन तक पहुँचाने हेतु
ार्यतत्पर सशक्त एवं समर्थ प्रान्तीय आर्य संगठन

महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा

(पंजीयन-एच. 333/र.नं.द/टी.इ. (७)१६७/१०४९,
स्थापना ५ मार्च १९७७)

मानव कल्याणकारी उपक्रम

- 'वैदिक गर्जना' मासिक मुखपत्र
- आर्य समाज दिनदर्शिका
- पू. हरिश्चन्द्र गुरूजी गौरव-'मानवता संस्कार एवं आर्यवीरदल शिविर'
- आर्य कन्या वैदिक संस्कार शिविर
- पातञ्जल ध्यानयोग शिविर
- प्रान्तीय आर्य वीर दल प्रशिक्षण शिविर
- पुरोहित प्रशिक्षण शिविर
- मानव जीवनकल्याण वेद प्रचार (श्रावणी) उपाकर्म अभियान
- स्व. विठ्ठलराव बिराजदार स्मृति विद्यालयीन राज्य. वक्तृत्व स्पर्धा
- सौ. तारादेवी जयनारायणजी मुंदडा विद्यालयीन राज्य.निबंध स्पर्धा
- सौ. कलावतीबाई व श्री मन्मथअप्पा चिल्ले (आनन्दमुनि) महाविद्यालयीन राज्य. वक्तृत्व स्पर्धा
- विद्यार्थी सहायता योजना
- सौ.डॉ. विमलादेवी व श्री डॉ.सु.ब.काले (ब्रह्ममुनि) महाविद्यालयीन राज्य. निबन्ध स्पर्धा
- स्व.पं. रामस्वरूप लोखण्डे स्मृति संस्कृत राज्य प्रतियोगिताएं
- मानवजीवन निर्माण अभियान - विद्यालय व महाविद्यालयों के लिए (वैदिक व्याख्यानमाला)
- शान्तिदेवी मायर स्मृति मानवनिर्माण एवं सेवा योजना
- स्व. भसीन स्मृति एवं मायर गौरव स्वास्थ्य रक्षा एवं चिकित्सा शिविर
- शान्तिदेवी मायर विधवा सहायता योजना
- वैदिक साहित्य भेट योजना
- पंथ-जातिप्रथा निर्मूलन अभियान
- वैदिक साहित्य प्रकाशन योजना
- आपत्कालीन सहायता योजना
- पर्जन्यवृष्टि यज्ञ अभियान
- गौ-कृषि सेवा योजना
- स्वा.सै.श्री गुलाबचंदजी लदनिया गौरव राज्य योगासन प्रतियोगिता
- सौ.धापादेवी गु. लदनिया गौरव राज्य प्राणायाम प्रतियोगिता

नागपुर(महाराष्ट्र) के समीपस्थ कान्हा आर्ष गुरुकुल के वार्षिकोत्सव का दीप जलाकर उद्घाटन करते हुए ट्रस्टी श्री तासकेजी एवं अन्य आर्य विद्वान्।

सभा के पूर्वमन्त्री श्री माधवरावजी देशपाण्डे को आर्य समाज काकडवाडी द्वारा 'आर्य कर्मवीर' पुरस्कार प्रदान किया।

अजमेर के ऋषिमेले में सम्मिलित प्रान्तीय सभा मन्त्री श्री राजेन्द्रजी दिवे एवं महाराष्ट्र के नर-नारी।

Reg.No.MAHBIL/2007/7493*Postal No.L/Beed/24/2018-2020

सेवा में,
श्री. ______________________

प्रेषक –
मन्त्री, महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा,
आर्य समाज, परली-वैजनाथ.
पिन ४३१ ५१५ जि.बीड (महाराष्ट्र)

यह मासिक पत्र सम्पादक व प्रकाशक श्री मन्त्री, महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा वैदिक प्रिंटर्स, परली वैजनाथ इस स्थलपर मुद्रित कर महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा के संपर्क कार्यालय-आर्य समाज, परली वैजनाथ ४३१५१५ (महाराष्ट्र) इस स्थान से प्रकाशित किया।

भावपूर्ण श्रद्धांजलि !

।। ओ३म् ।।

हैदराबाद स्वतन्त्रता संग्राम के स्वाधीनता सैनिक,
हिन्दी रक्षा आन्दोलन के सत्याग्रही,
लोकमान्य शिक्षण संस्था, पानचिंचोली
(ता.निलंगा जि.लातुर) के संस्थापक, समाजसेवी व्यक्तित्त्व
स्व.श्री.वासुदेवराव हनुमंतराव होलीकर
की पावन स्मृतिमें उनकी सहधर्मचारिणी
श्रीमती रुक्मिणीदेवी वासुदेवराव होलीकर
की ओर से वैदिक गर्जना मासिक का रंगीन मुखपृष्ठ भेंट

जीवेत् शरदः शतम् !